पोर्ट लुईस में हुए नागरिक सम्मान के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

अप्रैल 1, 2005
मॉरीशस

प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह का आज मॉरीशस में भारतीय मूल के लोगों की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा नागरिक सम्मान किया गया। इस मौके पर बोलते हुए प्रधानमंत्री ने कहा:

"मैं अपने भाइयों और बहनों के बीच सचमुच खुशी महसूस कर रहा हूँ। मैं खुशी से भी ज्यादा आपसे घनिष्ठता की भावना महसूस कर रहा हूँ क्योंकि चाहे आप भारत से हजारों मील दूर हैं, ज हमारे हृदयों का सचमुच समागम हुआ है। हमारी पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी मॉरीशस को 'एक छोटे महान राष्ट्र' के रूप में हमेशा याद किया करती थीं। यह भूमि अपनी सुंदरता से आगन्तुकों को अभिभूत करती है। इस देश के लोग कई सदियों के गहरे भ्रातृभाव और सांस्कृतिक निकटता के कारण बड़े स्नेह से हमारा आदर-सत्कार करते हैं।

यह मौका मेरे लिए ज्यादा गौरवान्वित करने वाला है क्योंकि इसका आयोजन इस मनमोहक स्थल पर किया गया है जिसका नामकरण भारत के महान सपूतों में से एक पर किया गया है। एक सदी पहले स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में 'धर्म संसद' को संबोधित किया था। उनका संदेश सम्पूर्ण विश्व में सुनाई दिया - विश्व के समस्त महान धर्मों के आध्यात्मिक मूल्यों की एकता का संदेश । कई तरह से विवेकानंद उन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें मैं शाश्वत भारत से जोड़ता हूँ।

उस समय भारत द्वारा विश्व को दिया गया संदेश जैसा कि अब है, वह यह है कि वैश्विक मूल्यों को विभिन्न राष्ट्रीयताओं, संस्कृति और धर्मों के लोगों द्वारा अपने-अपने ढंग से व्यक्त करने की अनुमति होनी चाहिए और मुझे वह तरीका जानकर प्रसन्नता हो रही है जिस तरह आप महान सांस्कृतिक और भाषाई विविधता की समस्याओं को हल कर रहे हैं। भारत ने विविधता में एकता को सफल बनाने के लिए काफी प्रयास किया है। वैश्वीकरण के इस युग में राष्ट्र निर्माण का यह प्रयोग समस्त विश्व के लिए काफी प्रासंगिक है। मॉरीशस और भारत की यह सुनिश्चत करने में महत्वूपर्ण साझेदारी है कि भविष्य का विश्व ऐसा हो जो सभी बहुलवादी समाजों के हितों की रक्षा करता हो। एक सच्चा वैश्विक समाज वास्तव में ऐसा होना चाहिए जहां सभी बहुलवादी समाज सद्भाव के साथ रहें और एक दूसरे पर निर्भर रहकर विकास करें।

स्वतंत्रता, लोकतंत्र, मूलभूत मानवाधिकार और कानून सम्मत शासन जैसे वैश्विक मूल्य हमें अपने पूर्वजों के लंबे संघर्ष के पश्चात् प्राप्त हुए हैं। सन् 1901 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय कुछ दिन मॉरीशस में ठहरे थे। भारत लौटने के पश्चात् गांधी जी मॉरीशस में उन लोगों की दासता में जीवन जीने की परिस्थितियों को कभी नहीं भूल सके। बाद के दशकों में पं0 काशीनाथ किश्तो, पं0 बासदेव विष्णुदयाल, डॉ0 मॉरीस कुरे और सर शिवसागर रामगुलाम जैसे नेताओं ने मॉरीशस को स्वतंत्रता के पथ पर स्थापित किया।

मॉरीशस के राष्ट्र पिता सर शिवसागर रामगुलाम ने इस देश को कई जातियों, पंथों और मान्यताओं का एक सुंदर बगीचा बनाने के लिए कड़ा संघर्ष किया। लोकतांत्रिक मूल्यों, मानव संसाधन विकास और मूलभूत ढांचे को प्रदान किए गए बल ने मॉरीशस को उच्च लाभ प्रदान किए हैं।

इस नींव पर उस इमारत की स्थापना की गई जिसे अनेक लोक आपके राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति सर अनिरूद्ध जगन्नाथ के सफल नेतृत्व में 'मॉरीशियन चमत्कार' मानते हैं।

वे मॉरीशस को एकल-फसल अर्थतंत्र से बहुआयामी गतिशील देश में परिवर्तित करने के लिए अकेले जिम्मेदार थे। उनके द्वारा शिक्षा खासकर महिलाओं की शिक्षा, कौशल विकास और औद्योगिक विकास पर दिए गए जोर ने मॉरीशस को समृद्धि के एक नये युग में ला दिया है। मॉरीशस के लोगों की कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से उन्हें समस्त विश्व में सम्मान मिला है। भारत के लोग आपकी उपलब्धियों पर खुशी और गर्व महसूस करते हैं। सर शिवसागर रामगुलाम और सर अनिरूद्ध जगन्नाथ जैसे उत्कृष्ट नेता हमारे आदर्श हैं और विश्व में बसे सभी भारतीयों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

मैं मानता हूँ कि भारत और मॉरीशस के बीच हमें साझे मूल्यों और साझी विरासत के इस ठोस आधार पर प्रगति की एक मजबूत इमारत का निर्माण करना है। विश्व तेजी से बदल रहा है- विज्ञान, तकनीकी और आईसीटी में विकास के साथ नए रास्ते खुले हैं। मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि प्रगति के पथ पर मॉरीशस हमारा साझीदार है। यहाँ स्थित साइबर टॉवर आईसीटी को आपके अर्थतंत्र का पांचवा स्तंभ बनाने के सपने को पूर्ण करने के लिए हमारे सहयोग का प्रतीक है। हम लोग जैव-प्रौद्योगिकी, शिक्षा और आर्थिक तथा तकनीकी सहयोग के क्षेत्र में साथ-साथ बढ़ते जा रहे हैं। हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हमारी सरकार, मॉरीशस की सरकार और जनता के साथ एक मजबूत तथा नये मॉरीशस के सपने को साकार करने के लिए घनिष्ठता से कार्य करेगी। भारत सरकार मॉरीशस को उन सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए, नई आर्थिक सक्षमताएं प्राप्त करके सभी संभव सहायता प्रदान करेगी जो वैश्वीकरण की चुनौतियों से निपटने में आती हैं।

प्रवासी भारतीय दिवस भारतीय मूल के लोगों की नई पीढ़ियों के साथ मिलकर कार्य करने की हमारी इच्छा को अभिव्यक्त करता है। मैं अत्यन्त आभारी हूँ कि मॉरीशस ने प्रवासी भारतीय दिवस समारोहों में काफी अधिक उपस्थिति के साथ हमेशा पूर्ण समर्थन प्रदान किया है। मॉरीशस गणतंत्र के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरूद्ध जगन्नाथ "प्रवासी भारतीय सम्मान " प्राप्त करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उप प्रधानमंत्री माननीय प्रविन्द जगन्नाथ द्वितीय प्रवासी भारतीय दिवस के मॉरीशियन प्रतिनिधिमंडल के नेता थे। महामहिम जनाब अब्दुल रऊफ बुन्धुन साहब ने तृतीय प्रवासी भारतीय दिवस के प्रतिनिधिमंडल की अगुआई की। मैंने उनके साथ मुंबई में किए गए वार्तालाप को संजोए रखा है। ये वे कड़ियाँ है जिन्हें हमें हर संभव तरीके से मजबूत करना चाहिए।

भारत और मॉरीशस के बीच संबंधों की गहराई को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। महान विविधता का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत के इतने सारे मित्रों की उपस्थिति हमारे देश के प्रति आपके स्नेह का सबूत है।

मैं इस मौके का इस्तेमाल आपको बधाई तथा धन्यवाद देने के लिए करना चाहता हूँ। हमारे रिश्ते हृदय और खून के रिश्ते हैं- साझी विरासत और संस्कृति से उत्पन्न रिश्ते हैं। मुझे यह देखकर आनन्द हो रहा है कि इतनी पीढ़ियों के बाद भी हमारी समान संस्कृति, रीति-रिवाज, उत्सव और मान्यताओं को यहाँ पर पूर्ण अभिव्यक्ति मिली है। कृपया इस विरासत को संजोए रखिएगा। मॉरीशस और इसके लोगों के विकास और समृद्धि के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मैं, दोनों देशों के लोगों के बीच स्थाई मित्रता और सहयोग के भारतीय संकल्प को भी दोहराता हूँ।

जय मॉरीशस, जय हिन्द। ”